• वास्तु...

रोज-रोज झगड़े

दिनभर की भागदौड़ और थकान के बाद हर इंसान अपने घर आकर सुकून महसूस करना चाहता है। लेकिन कई बार सब कुछ ठीक होने के बावजूद घर में बात-बात पर तनाव, किचकिच और बेवजह के झगड़े होने लगते हैं। परिवार के सदस्यों के बीच तालमेल बिगड़ने लगता है और मन हमेशा अशांत रहता है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि कई बार इसके पीछे की वजह आपकी किस्मत या स्वभाव नहीं, बल्कि घर का वास्तु दोष भी हो सकता है।

▶ वास्तु में घर के मुख्य दरवाजे को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। मान्यता है कि घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश मुख्य द्वार से ही होता है। इसलिए घर के मुख्य दरवाजे के आसपास गंदगी, कूड़ा-कबाड़ या बेकार सामान जमा नहीं होने देना चाहिए. मुख्य दरवाजे को रोज साफ रखें।

▶ वास्तु के अनुसार, घर में लंबे समय तक टूटे हुए सामान को रखना अच्छा नहीं माना जाता। खराब घड़ी, टूटा शीशा, बंद इलेक्ट्रॉनिक सामान या बेकार फर्नीचर जैसी चीजें घर में जगह घेरती हैं और अव्यवस्था बढ़ाती हैं. अगर कोई वस्तु इस्तेमाल के लायक नहीं है, तो उसे ठीक करवाएं या घर से हटा दें।

▶ पति-पत्नी के रिश्ते में बार-बार तनाव और झगड़े होते हैं तो वास्तु के अनुसार बेडरूम की व्यवस्था पर भी ध्यान देना चाहिए। कमरे में बहुत ज्यादा सामान रखने से बचें और बिस्तर के आसपास सफाई रखें। वास्तु मान्यताओं के अनुसार, पति-पत्नी के कमरे में शीशा ऐसी जगह नहीं होना चाहिए जिसमें सोते समय बिस्तर का प्रतिबिंब दिखाई दे। अगर ऐसा है तो रात में शीशे को कपड़े से ढकने की सलाह दी जाती है।

▶ घर में पूजा का स्थान हमेशा साफ रखना चाहिए। धार्मिक मान्यता है कि पूजा स्थल में गंदगी या बिखरा हुआ सामान रखने से सकारात्मक माहौल प्रभावित होता है। इसलिए पूजा घर में जरूरत से ज्यादा सामान जमा न करें।

▶ वास्तु और लोक मान्यताओं में नमक को नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने वाला माना जाता है. कुछ लोग घर के कोनों में सेंधा नमक रखने या पानी में सेंधा नमक डालकर पोछा लगाने की सलाह देते हैं। मान्यता है कि इससे घर का वातावरण सकारात्मक रहता है।

▶ वास्तु और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, घर में तुलसी का पौधा लगाने से सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है।

• मथुरा...

गोपेश्वर महादेव मंदिर

मथुरा-वृंदावन का नाम आते है कि सबसे पहले भगवान श्रीकृष्ण और राधा रानी का ख्याल आता है। ब्रज में की गई श्रीकृष्ण की लिलाएं याद आती हैं। मथुरा-वृंदावन समेत पूरे ब्रज क्षेत्र में श्रीकृष्ण की लीलाएं और राधा रानी के साथ उनकी प्रेम की कहानियां सुनी और सुनाई जाती हैं। यहां भगवान श्रीकृष्ण के कई छोटे बड़े मंदिर हैं, लेकिन यहां एक ऐसा मंदिर भी है, जिसका संबंध देवों के देव महादेव है।

इस मंदिर का नाम है 'गोपेश्वर महादेव मंदिर'। ये वृंदावन के सबसे पुराने मंदिरों में शामिल है। मान्यता है कि यहां मौजूद शिवलिंग की स्थापना भगवान श्री कृष्ण के पोते वज्रनाभ द्वारा की गई थी। यही नहीं ये विश्व का इकलौता मंदिर है, जहां महादेव महिला के रूप में विराजे हैं. यहां दूर दूर से भक्त महादेव के 'गोपी' स्वरूप के दर्शन करने आते हैं। आइए जानते हैं इस मंदिर की कहानी-

इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यहां होने वाले श्रृंगार को माना जाता है। यहां दिन के समय तो शिवलिंग का सामान्य पूजन किया जाता है, लेकिन रात के समय शिवलिंग का बहुत सुंदर 16 श्रृंगार किया जाता है। शाम की आरती के समय शिवलिंग का सोलह श्रृंगार करके गोपी के रूप में सजाने की परंपरा है। यहां भक्त साड़ी, गहने, बिंदी और चूड़ी से सजाए गए शिवलिंग के दर्शन करते हैं।

इस मंदिर में दिन में चार बार आरती की जाती है। सावन का माह शुरू हो चुका है। सावन में इस मंदिर में महादेव के लिए भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है। इस मंदिर में शिवजी को सोलह श्रृंगार की वस्तुएं चढ़ाने से अखंड सौभाग्य प्राप्त होता है।

कहा जाता है कि यहां भगवान शिव ने खुद श्रीकृष्ण का महारास देखने के लिए गोपी के रूप में आए थे। इस मंदिर की कथा द्वापरयुग से जुड़ी बताई जाती है। कथा के अनुसार, भगवान श्रीकृष्ण वृंदावन में गोपियों के साथ महारास कर रहे थे। इसी चर्चा तीनों लोकों में थी। जब महादेव ने इसके बारे में जाना तो वह भी श्रीकृष्ण के दर्शन करने के लिए कैलाश से वृंदावन पहुंच गए, लेकिन रास के लिए इजाजत सिर्फ गोपियों को थी।

उस समय भगवान शिव ने एक योजना बनाई। उन्होंने अपना वेश बदला और गोपी का रूप धारण कर लिया। फिर वो उसी गोपी के रूप में महारास में शामिल हो गए और भगवान श्रीकृष्ण के साथ नृत्य किया। जब श्रीकृष्ण ने जाना कि वो गोपी नहीं, बल्कि स्वयं महादेव हैं, तो श्रीकृष्ण बहुत प्रसन्न हुए। श्रीकृष्ण ने शिवजी को 'गोपेश्वर' नाम दिया। इसका अर्थ है गोपियों के स्वामी। साथ ही उन्होंने महादेव से सदैव के लिए ब्रज में रहने का आग्रह किया। तभी से भगवान शिव गोपेश्वर रूप में वृंदावन में विराजमान हैं।

विदेश में मौजूद हैं भगवान शिव के मंदिर

सावन में शिव आराधना बहुत ही खास मानी जाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार हर वर्ष श्रावण माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि से सावन महीना आरंभ हो जाता है। सावन का महीना दक्षिणायन में आता है और इसके देवता भोलेनाथ होते हैं।

ऐसे में सावन के महीने में शिवजी की आराधना बहुत ही शुभ फलदायक होती है। सावन में वर्षा ऋतु अपने चरम पर होती है जिसके कारण शिवजी को चढ़ाने वाले फूल पत्तों की भरमार होती है...

सावन का महीना भगवान शिव को बहुत ही प्रिय होता है और पूरे महीने भक्त शिव आराधना में लीन रहते हैं। इस माह शिवलिंग पर रुद्राभिषेक, जलाभिषेक, बेलपत्र, भस्म आदि चढ़ाने की परंपराएं होती हैं। हिंदू धर्म में सावन महीने का विशेष महत्व होता है और ऐसी मान्यता है कि भोलेनाथ सावन में जल्द प्रसन्न होते हैं और हर एक मनोकामानएं पूरी करते हैं। सावन में शिव आराधना बहुत ही खास मानी जाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार हर वर्ष श्रावण माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि से सावन महीना आरंभ हो जाता है। सावन का महीना दक्षिणायन में आता है और इसके देवता भोलेनाथ होते हैं। ऐसे में सावन के महीने में शिवजी की आराधना बहुत ही शुभ फलदायक होती है। सावन में वर्षा ऋतु अपने चरम पर होती है जिसके कारण शिवजी को चढ़ाने वाले फूल पत्तों की भरमार होती है। इस कारण से सावन में शिव आराधना का विशेष महत्व होता है। भगवान शिव स्वयं सनत्कुमार को सावन महीने के बारे में बताते हैं कि मुझे श्रावण बहुत प्रिय है। इस महीने नियम-संयम से रहते हुए पूजा करने से शक्ति और पुण्य बढ़ते हैं। इस महीने में भगवान शिव के दर्शन करने के लिए लोग अलग-अलग मंदिरों में पहुंचते हैं। यहां हम आपको भगवान शिव के विश्व में प्रसिद्ध मंदिरों के बारे में बताने जा रहे हैं...

● **पशुपतिनाथ मंदिर, काठमांडू, नेपाल**- यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट पशुपतिनाथ मंदिर बागमती नदी के किनारे पर मौजूद है। चार मुख वाला शिवलिंग, सोने की छत, और चांदी के दरवाजे इस मंदिर को दुनिया के सबसे अलग मंदिरों में से एक बनाते हैं। भारतीयों की इस मंदिर में फ्री एंट्री है जबिक दूसरे विदेशियों से करीब एनपीआर 1000 लिए जाते हैं. सिंतबर से नवंबर के बीच यहां घूमने का टाइम बेस्ट है। इसके सबसे पास का हवाई अड्डा त्रिभुवन एयरपोर्ट है।

● **मुन्नेस्वरम, चिलाव, श्रीलंका**- कहते हैं कि यहां भगवान राम ने देवों के देव महादेव की पूजा की थी। इसके परिसर में पांच मंदिरों का कॉम्प्लेक्स है, जिसमें शिव का मंदिर सबसे बड़ा है। इस मंदिर की कोलंबो से दूरी करीब 80 से 85 किलोमीटर है। बस या ट्रेन से चिलाव पहुंचने के बाद छोटे वाहनों की सवारी करके यहां पहुंचा जा सकता है। यहां हर किसी के लिए एंट्री फ्री है।

● **प्रम्बानन मंदिर, जावा, इंडोनेशिया**- ये मंदिर दक्षिण-एशिया का सबसे बड़ा हिंदी मंदिर कॉम्प्लेक्स है और ये एक यूनेस्को साइट भी है। यहां सबसे ऊंचा (47 मीटर) शिव का मंदिर है. रिपोर्ट्स के मुताबिक मंदिर में दर्शन के लिए वयस्कों से करीब आईडीआर 400000 लिए जाते हैं। मई से अक्टूबर के बीच यहां घूमने के लिए आना बेस्ट है। यहां पहुंचने के बाद गाइड लेना फायदेमंद होता है।

● **मुक्ति गुमेश्वर मंदिर, मिंटो, ऑस्ट्रेलिया**- ये दुनिया का पहला ऐसा मंदिर है जिसे आर्टिफिशियल गुफा में बनाया गया है। इसे 13वें ज्योतिर्लिंग के रूप में माना जाता है और इसके अंदर 12 ज्योतिर्लिंग की प्रतिकृतियां मौजूद है। यहां का शांत माहौल मन को खुश कर देता है। ये सिडनी के सबसे पास है इसलिए आप इस शहर के एयरपोर्ट से यहां पहुंच सकते हैं। मंदिर और सिडनी के बीच की दूरी करीब 40 किलोमीटर है।

● **अरुलमिगु श्री राजा कालियम्मन ग्लास टेम्पल, मलेशिया**- इस मंदिर की सबसे बड़ी खासियत ग्लास हैं। ये देवी रजाकालियम्मन (माता काली) को समर्पित है जो भगवान शिव का ही एक स्त्री रूप मानी जाती हैं। कहते हैं कि इस मंदिर की दीवारों में करीब 3 लाख से ज्यादा रुद्राक्ष और रंगीन कांच लगे हैं। वैसे शिव की मूर्ति मेन अट्रैक्शन है। आप यहां जोहोर बहू शहर से आसानी से पहुंच सकते हैं।

■ पं. नित्यानंद

• शुक्रवार को...

माता लक्ष्मी

शुक्रवार का दिन सुख और वैभव की दात्री माता लक्ष्मी का होता है। इस दिन विधि-विधान से माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है। पूजा के साथ-साथ व्रत भी किया जाता है। सनातन धर्म की मान्यता है कि शुक्रवार को जो कोई भी माता लक्ष्मी की विधि-विधान से पूजा और व्रत करता है उसके जीवन में खुशहाली आती है। माता लक्ष्मी की कृपा से घर धन धान्य से भर जाता है. हर तरह की सुख-सुविधा प्राप्त होती है। ये दिन शुक्र देव का भी होता है। इस दिन उनसे जुड़े उपाय भी किए जाते हैं। शुक्रवार के दिन पूजा-पाठ, व्रत और उपाय के अलावा कई चीजों का दान करना भी बहुत शुभ माना जाता है। वहीं कुछ चीजें ऐसी भी हैं, जिनका दान करना शुक्रवार के दिन वर्जित किया गया गया है। इनको करने से माता लक्ष्मी नाराज हो सकती हैं। साथ ही कुछ अन्य काम भी हैं, जो शुक्रवार को नहीं करने चाहिए। शुक्रवार के दिन मांसाहारी चीजों का सेवन बिल्कुल नहीं करें। इस नियम का पालन घर के साथ-साथ बाहर भी करें। अगर आप इस नियम की अनदेखी करते हैं, तो माता लक्ष्मी नाराज हो सकती हैं।

• गैस स्टोव...

ज्योतिष और वास्तु शास्त्र के अनुसार, गैस चूल्हे को अग्नि तत्व का प्रतीक माना जाता है। अग्नि देवता को घर की ऊर्जा, स्वास्थ्य और समृद्धि से जोड़ा जाता है इसलिए रसोई में प्रवेश करने के बाद सुबह सबसे पहले गैस चूल्हे को साफ करना शुभ माना जाता है। यदि चूल्हे पर पिछले दिन के दूध, चाय या तेल के दाग रह गए हों और आप उस पर खाना बनाना शुरू कर दें, तो वास्तु दृष्टि से यह अशुभ होता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित